चूहों की चौकड़ी

बच्चों को कहीं से खबर मिल गई कि इस बार गर्मी की छुट्टियाँ जल्दी होंगी। फिर पता चला नये सत्र में नये अध्यापक आएँगे। उनका नाम भी किसी ने बता दिया – कालीकुमार तर्कालंकार।

आधी छुट्टी होने पर कुछ लड़के पेड़ों के झुरमुट में खड़े होकर बतियाने लगे। सभी लोग इस बात पर सहमत थे कि जो नए अध्यापक स्कूल में आनेवाले हैं, उनसे वे बिलकुल नहीं पढ़ेंगे, चाहे कुछ भी हो जाए।

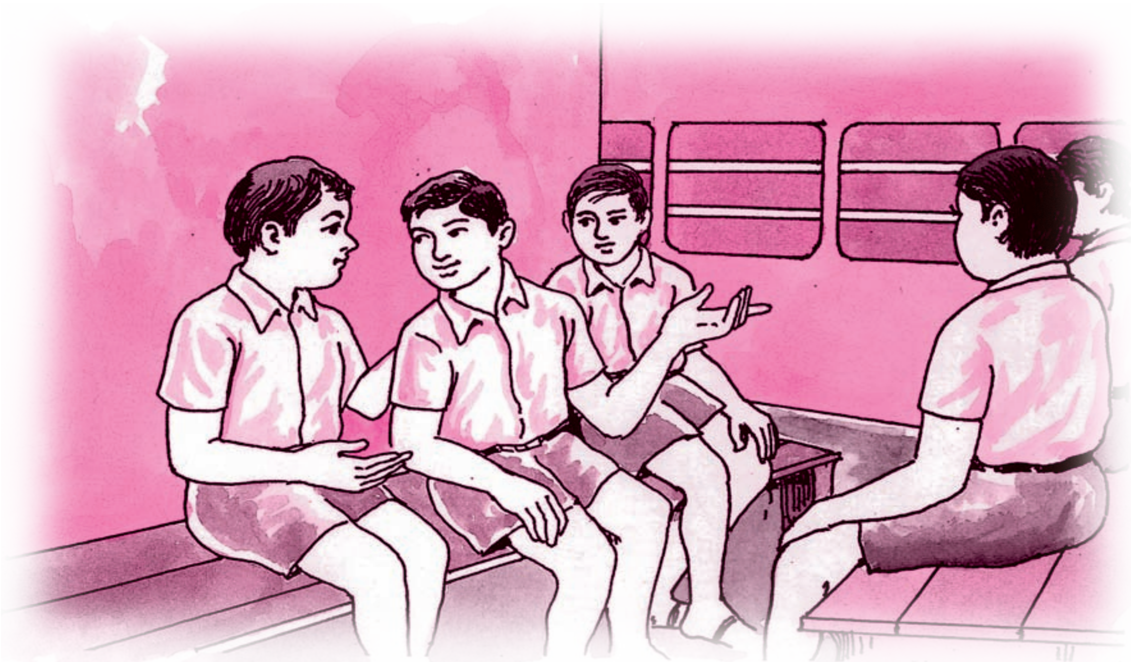

लड़के छुट्टियों में घर चले गए। मौज मस्ती में वक्त कट गया। स्कूल खुल गया तो लड़के फिर लौटने लगे। वे आकर रेलगाड़ी में बैठे। लड़कों के बीच एक लड़का था, चिकुन। वह मजाक करने के लिए कविता पढ़ने लगा।

– आई वर्षा रानी । छींटें पड़ीं मनमानी ।।

बाकी लड़के ताली बजाकर हँसने लगे ।

रेलगाड़ी एक छोटे–से स्टेशन पर रुकी । एक सज्जन गाड़ी में चढ़े । उनके पास छोटे-मोटे कई सामान थे । एक बिछौना, एक टीन का ट्रंक, एक पोटली और दो हंडियाँ, जिनके मुँह कपड़े से बन्द थे ।

लड़कों में से एक ने उस सज्जन से कहा – 'बूढ़े बाबा! इस डिब्बे में जगह नहीं है, किसी दूसरे डिब्बे में जाओ न।'

उस आदमी ने प्यार से कहा – 'बड़ी भीड़ है । कहीं जगह नहीं है । मैं एक कोने में बैठ जाऊँगा' । ऐसा कहकर वे फर्श पर अपनी दरी बिछाकर बैठ गये ।

एक लड़के ने पूछा – ''बाबा,आप कहाँ जा रहे हैं । बाबा कुछ जवाब देते, उससे पहले माधवन बोल उठा– 'अरे, श्राद्ध करने जा रहे होंगे ।''

बाबा हैरानी से बोले – ''श्राद्ध ! किसका श्राद्ध !'' उसी लड़के ने ही जवाब दे दिया – ''अरे,काले कुम्हड़े का श्राद्ध। नहीं, हरी मिर्च का श्राद्ध ।''

चिकुन ने कविता पढ़ी –

हरी मिर्च और काला कुम्हड़ा, जो बैठा है, हो जाय खड़ा।

लड़के ताली बजाकर हँसने गाने लगे।

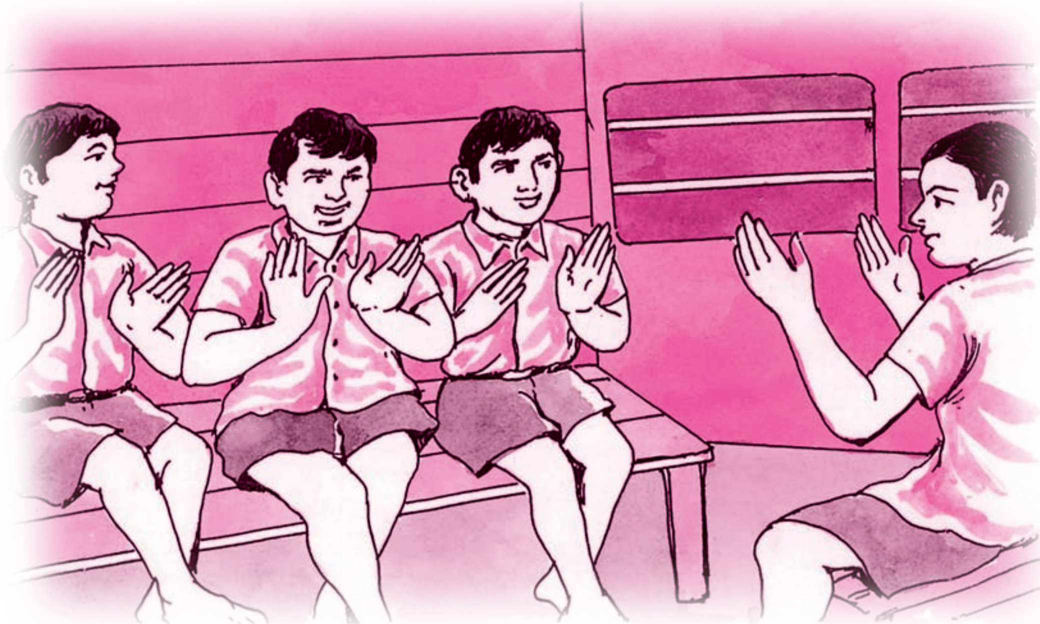

अगला स्टेशन था संबलपुर। सज्जन नीचे उतरे। दो नये सज्जन उनसे मिलने आए थे। वे बाहर खड़े बातचीत करने लगे। जब वापस डिब्बे में आए तो चिकुन ने चेतावनी देते हुए कहा –

"बाबा, देखिए – इस डिब्बे से उतर जाने में ही आपकी भलाई है।"

"ऐसा क्यों ?"

"यहाँ डिब्बे में चूहों का बड़ा कष्ट है।"

"चूहे ? क्या मतलब ?"

"देखिए न। चूहों ने आपकी हंडियों का क्या हाल कर रखा है।"

तब सज्जन ने देखा कि रसगुल्लों से भरी हंडियाँ खाली हैं। वे अपनी पोटली खोजने लगे। तब चिकुन बोला – "बाबा, आपकी पोटली में न जाने क्या था, उसे तो चूहे उठाकर भाग खड़े हुए।" सज्जन को याद आया कि उसमें तो उनके बगीचे

के कुछ पके रसीले आम बँधे हुए थे। सज्जन ने हँसकर कहा – ‘‘लगता है चूहों को बड़ी भूख लगी थी।’’

चिकुन बोला – ‘‘चूहे तो बिना भूख के सब चट कर जाते हैं।’’

और बच्चे क्यों पीछे रहते। सभी कहने लगे – ‘‘हाँ हाँ,ऐसा ही है। कुछ और भी उन्हें मिलता तो भी चट कर जाते।’’

सज्जन ने मुस्कराते हुए कहा – ‘‘भारी भूल हो गई। मुझेअगर मालूम होता कि गाड़ी चूहों से भरी पड़ी है, तो मैं उनके लिए कुछ और ले आता।’’ सज्जन को मुस्कराते देख बच्चे झेंप कर चुप हो गये। मन में सोचने लगे – ‘‘ये नाराज हो जाते तो मजा आता।’’

अगला स्टेशन आ गया अनगुल। तब सज्जन बोले – ‘‘ठीक है। अब मैं इस डिब्बे से निकलकर दूसरे में चला जाता हूँ। तुम लोग मौजमस्ती करो। तुम्हें अब कष्ट नहीं दूँगा।’’

लड़कों ने फौरन कहा – ‘‘नहीं, नहीं बाबा ! हमें क्या कष्ट है। आप बैठिए न। हमारे साथ आप इसी डिब्बे में चलिए। हम सब आपके सामानों का चौकसी से पहरा देंगे। चूहे कुछ नहीं कर पाएँगे।’’

अभी डिब्बे के सामने एक ठेला आ गया। ठेलेवाला चिल्ला रहा था – ‘‘गर्म गर्म समोसे।’’ बाबा ने उसे पास बुलाया। लड़कों से बोले–देखें, चूहे समोसे खाते हैं कि नहीं। ठेलेवाले से कहा– ‘‘हर बच्चे को दो–दो समोसे दो।’’ लड़के बड़े खुश हुए। सब खुशी से समोसे खाने लगे।

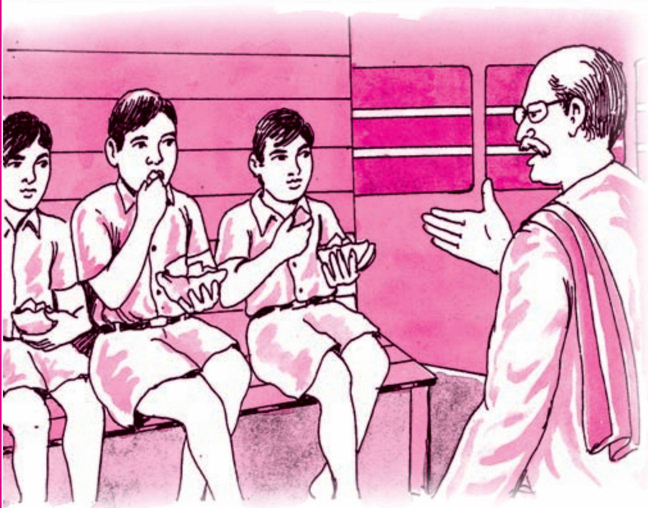

समोसे खाते–खाते लड़कों ने पूछा – ‘‘बाबा, आप कहाँ जा रहे हैं ?’’

‘‘मैं रोजगार की तलाश में निकला हूँ। जहाँ काम मिलेगा वहीं उतर पड़ूँगा।’’ बूढ़े सज्जन ने कहा। लडकों ने फिर पूछा – ‘‘आप क्या काम जानते हैं ?’’

सज्जन ने बताया – ‘‘मैं शिक्षक हूँ। हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, जैसी बहुत-सी भाषाएँ जानता हूँ।’’

लड़के बड़े खुश हुए। एक लड़के ने उछल कर कहा – ‘‘फिर तो आपको कहीं जाने की जरूरत नहीं। आप हमारे स्कूल में आकर पढ़ाइए। हमारे यहाँ भाषा सिखानेवाले की बड़ी जरूरत है।’’

‘‘अरे, तुम्हारे स्कूलवाले भला मुझे क्यों रखेंगे ?’’

‘‘रखेंगे कैसे नहीं ? हम अपने स्कूल में किसी ऐरे–गैरे को आने ही नहीं देंगे।’’

‘‘अगर तुम्हारे स्कूल के अधिकारी मुझे पसंद न करें तो ?’’

‘‘पसंद न करने का सवाल नहीं उठता। हमारे अधिकारी अच्छे–अच्छे अध्यापक ढूँढ़ लाते हैं। आप हमारे साथ चलिए। पसंद नहीं करेंगे तो हम स्कूल छोड़ देंगे।’’ बच्चों की जिद देख सज्जन ने कहा–‘‘अच्छा बाबा, तो तुम्हीं मुझे ले चलो।’’

इतने में गाड़ी स्टेशन पर आकर रुकी। वहाँ स्कूल के सेक्रेटरी बाबू पहले ही खड़े थे। बूढ़े सज्जन को देखते ही वे उनके पास आ गये। उन्हें प्रणाम किया। बोले

– ''आइए तर्कालंकार महाशय। हम सब खुश हैं कि आप आ गए। चलिए आपके रहने का सब इंतजाम हो गया है।'' लड़के एक दूसरे का मुँह ताकने लगे।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर
की कहानी के आधार पर

शिक्षक के लिए :

शिक्षक पहले छात्रों से पूछकर यह पता कर लेंगे कि वे अपने घर पर बूढ़े दादा और बूढ़ी दादी के प्रति कैसा व्यवहर करते हैं और दादा-दादी उन्हें कैसा प्यार करते हैं।

शिक्षक छात्रों को समझा देंगे कि घर हो या बाहर, हम बूढ़ों का आदर करें, कभी भी उनका उपहास न करें।

शब्दार्थ :

चौकड़ी	-	उपद्रवी लोगों का समूह
झुरमुट	-	समूह
बतियाना	-	बात करना
सहमत	-	राजी
बिछौना	-	बिस्तर
श्राद्ध	-	पितरों की पूजा
चेतावनी	-	खतरे के पूर्व की सूचना
रसीले	-	रसदार
तलाश	-	खोज
इंतजार	-	प्रतीक्ष
इंतजाम	-	व्यवस्था

अनुशीलनी

प्रश्न १. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर बताइए :

(i) बच्चों को क्या खबर मिल गई ?

(ii) नए अध्यापक का नाम क्या था ?

(iii) छुट्टियों के बाद लड़के घर से कैसे लौटे ?

(iv) हंडियों के मुँह कैसे बंद थे ?

(v) हंडियों मे क्या था ?

(vi) हर बच्चे को कितने-कितने समोसे दिए गए ?

(vii) शिक्षक कौन-कौन सी भाषाएँ जानते थे ?

(viii) बूढ़े सज्जन को किसने प्रणाम किया ?

प्रश्न २. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

(i) सभी लड़के किस बात पर सहमत थे ?

(ii) लड़कों ने बूढ़े सज्जन से क्या कहा ?

(iii) चिकुन ने सज्जन को क्या सलाह दी ?

(iv) चूहों के उत्पात से बूढ़े सज्जन की क्या प्रतिक्रिया हुई ?

(v) लड़कों ने क्या जिद की ?

(vi) बूढ़े सज्जन कौन थे ?

(vii) तुम्हें कौन-से अध्यापक अच्छे लगते हैं ?

प्रश्न ३. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(i) कौन मजाक करने के लिए कविता पढ़ने लगा ?

(ii) किस स्टेशन पर ठेला आया ?

(iii) कौन बोल उठा कि बाब श्राद्ध करने जा रहे हैं ?

(iv) किस स्टेशन पर सज्जन नीचे उतरे थे ?

(v) किसकी कहानी के आधार पर यह कहानी लिखी गई है ?

भाषा कार्य :

प्रश्न ४. 'नये अधयापक' में 'नये' शब्द अध्यापक की विशेषता है। ऐसे विशेषता बताने बाले शब्दों को 'विशेषण' कहते हैं। जिसकी विशेषता बताई जाए वह शब्द 'संज्ञा' है। आप इस पाठ में से विशेषणों और उनके संज्ञा-शब्दों को चुन कर लिखिए :

जैसे – विशेषण – संज्ञा, आधी – छुट्टी

प्रश्न ५.

मस्त + ई = मस्ती,
हैरान + ई = हैरानी
ऐसे अन्य शब्द बनाइए।

प्रश्न ६. कोष्ठक में से सही शब्द चुनकर खाली जगहें भरिए :

(पीछे, के बीच, कहीं, के पास, के सामने)

उन लड़कों ----- एक लड़का था चिकुन।

उन ------- छोटे मोटे कुछ सामान थे।

बच्चे क्यों --- रहते।

डिब्बे ------ एक ठेला आ गया।

आपको ------जाने की जरूरत नहीं।

प्रश्न ७. युग्म शब्द छाँटिए और वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

जैसे - मौज मस्ती

प्रश्न ८. कठिन शब्दों को फिर से लिखिए-

छुट्टी, अध्यापक, स्कूल, हंडियाँ, ट्रंक, स्टेशन, संस्कृत, कुम्हड़ा, श्राद्ध, सेक्रेटरी

प्रश्न ९. का, के या की से खाली स्थान भरिए :

गर्मी..............छुट्टियाँ   हंडियों .... हाल

उन .... नाम   आप .... भलाई

पेडों .... झुरमुट रोजगार .... तलाश

किस .... श्राद्ध पसंद करने .... सवाल

दूसरे .... मुँह रहने .... इंतजाम

प्रश्न १० . नीचे 'क' विभाग में कुछ शब्द दिए गए हैं। उनके विपरीतार्थक शब्द 'ख' विभाग में हैं, उन्हें जोडिए :

(क) अगला, खाली, गर्म, हरी, भलाई, बड़ा, सज्जन, गर्मी, हँसना, बंद होना, बंद, चढ़ना, जवाब, पास, बूढा, पसंद, अच्छा

(ख) नापसंद, बालक, दूर, पूरा, पिछला, ठंड, पकी, छोटा, दुर्जन, सवाल, उतरना, खुला, बुराई, बुरा, रोना, सर्दी, खुलना,

आपके लिए काम

आप शिक्षक दिवस में भाषण देने के लिए एक लेखा तैयार कीजिए और उसे अपने मित्रों को सुनाइए। कर्ण, उपमन्यु, आरुणि और एकलव्य आदि शिष्यों की गुरुभक्ति संबधी चित्र बनाइए और उन्हें अपने अध्ययन-कक्ष में टाँगकर रखिए।

क्या आप जानते हैं ?

१. कर्ता + ने

भूतकाल की क्रिया सकर्मक हो, तो कर्ता के साथ 'ने' आता है; जैसे-

रीना ने आम खाया ।

राम ने रोटी खायी ।

२. ध्यान दें

यहाँ कर्ता के साथ 'ने' है।

क्रिया कर्ता के अनुसार नहीं बदलती ।

क्रिया कर्म के लिंग और वचन को अपनाती है।

जैसे –

राम ने एक आम खाया।

सीता ने चार आम खाए।

राम ने एक रोटी खाई।

सीता ने चार रोटियाँ खाईं।

ऐसे वाक्य बनाएँ। कर्म के लिंग वचन बदल जाए तो क्रिया भी बदल जाएगी।

(शिक्षक इस कार्य में सहायता करें। अनेक उदाहरण देकर थोड़ा अभ्यास करा दें)

३. सर्वनाम + ने

मैं – मैंने, तू – तूने

हम – हमने, तुम – तुमने

लेकिन : वह – उसने, वे – उन्होंने।